प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय एक

प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

© 2012 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग का समीक्षा, टिप्पणियों या लेखन के लिए संक्षिप्त उद्धृणों के प्रयोग के अतिरिक्त, किसी भी रूप में या धन अर्जित करने के किसी भी साधन के द्वारा प्रकाशक से लिखित स्वीकृति के बिना पुन: प्रकाशित करना वर्जित है। Third Millennium Ministries, Inc., P.O. Box 300769, Fern Park, Florida 32730-0769.

थर्ड मिलिनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलिनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि ***मुफ्त में, पूरी दुनिया के लिये, बाइबल पर आधारित शिक्षा*** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बांटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमिडिया सेमनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिनिलियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवता में द हिस्टरी चैनल © के समान हैं। सन् 2009 में, सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलिनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवाओं की अधिक जानकारी के लिये एवं आप किस प्रकार इसमें सहयोग कर सकते हैं, आप हम से http://thirdmill.org पर मिल सकते हैं।

विषय-वस्तु सूची

पृष्ठ संख्या

१. प्रस्तावना 1
२. लेखनकारिता 1
क. लूका का सुसमाचार 2
1. सुस्पष्ट 2
2. अस्पष्ट 3
ख. आरम्भिक कलीसिया 4
1. पाण्डुलिपियाँ 4
2. आरम्भिक कलीसियाई अगुवे 5
ग. नया नियम 6
1. लेखक के बारे में सुराग 6
2. लूका 7
३. ऐतिहासिक समयावधि 8
क, तिथि 8
1. 70 ई. सन् के बाद 9
2. 70 ई. सन् से पहिले 10
ख. वास्तविक श्रोतागण 11
1. थियुफिलुस 11
2. विस्तृत श्रोतागण 12
ग. सामाजिक संदर्भ 12
1. रोमी साम्राज्य 12
2. यहूदी 14
४. धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि 16
क. पुराना नियम 16
1. इतिहास 17
2. इस्राएल 19
ख. परमेश्वर का राज्य 21
1. यहूदी धर्मविज्ञान 22
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला 22
3. मसीही धर्मविज्ञान 23
ग. लूका का सुसमाचार 25
1. यीशु 25
2. प्रेरित लोग 26
५. निष्कर्ष 28

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय एक

प्रेरितों के काम की पृष्टभूमि

प्रस्तावना

प्रसिद्ध जर्मन संगीतकार लुडविंग वान् बीथोवेन को आज भी उनके सुंदर एवं कलात्मक रचनाओं के लिए दुनिया भर में याद किया जाता है। परन्तु जितने अधिक आश्चर्यजनक उनके संगीत रचनाएं अपने आप में थी, उनकी रचनाएं और भी ज्यादा प्रभावशाली हैं जब हम यह याद करते हैं कि बीथोवेन धीरे-धीरे होने वाले बहरेपन की बीमारी को झेल रहे थे, जो तब शुरू हुई थी जब वे जवान ही थे। वास्तव में, यह एहसास करना आश्चर्यजनक है कि बीथोवेन ने अपनी महान रचनाओं को तब लिखा जब वे पूरी तरह से बहरे हो गये थे। बीथोवेन के जीवन की पृष्ठभूमि को जानने के बाद उनका संगीत और भी अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

कई महत्वपूर्ण तरीकों से, पवित्रशास्त्र की सराहना करना बीथोवेन की सराहना करने जैसा ही है। बाइबल की विभिन्न पुस्तकें जिस शक्ति और स्पष्टता के साथ परमेश्वर के प्रकाशन की घोषणा करती हैं, उन्हें देखना कतई मुश्किल नहीं है। परन्तु जब हम बाइबल के लेखकों की पृष्ठभूमि, उनके संसार, उनके जीवनों और उनके उद्देश्यों के बारे में जान जाते हैं, तो पवित्रशास्त्र के लिए हमारी समझ और सराहना और भी ज्यादा गहरी हो जाती है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक पर हमारी इस श्रृंखला का यह पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम नए नियम की पाँचवीं पुस्तक की खोज-बीन करेंगे, जिसे अक्सर प्रेरितों के काम कहा जाता है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "प्रेरितों के काम की पृष्ठभूमि," के रखा है और हम कई मौलिक विषयों का अध्ययन करेंगे जो हमें इस पुस्तक की शिक्षाओं को अधिक गहराई और अधिक स्पष्ट रूप से समझने और इसकी सराहना करने में मदद करेंगे।

हमारा यह अध्याय प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं को स्पर्श करेगा। सबसे पहले, हम पुस्तक के लेखनकारिता की जाँच करेंगे। दूसरा, हम इसकी ऐतिहासिक समयावधि को देखेंगे। और तीसरा, हम इसके धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि की खोजबीन करेंगे।। आइये प्रेरितों के काम के लेखनकारिता को देखने के साथ आरम्भ करें।

लेखनकारिता

संपूर्ण पवित्रशास्त्र की तरह ही, प्रेरितों के काम की पुस्तक भी पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित थी। परन्तु इसकी दिव्य प्रेरणा को इसके मानवीय लेखकों के ऊपर से हमारे ध्यान-केंद्रण को कम करने की ओर नहीं ले जाना चाहिए। पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के मौलिक लेखन को त्रुटि से मुक्त रखा, परन्तु उसने फिर भी मानव लेखकों के व्यक्तित्वों, पृष्ठभूमियों और इरादों का प्रयोग किया।

प्रेरितों के काम को पारम्परिक तौर पर लूका द्वारा लिखित माना जाता है, जो कि तीसरे सुसमाचार का लेखक है। लेकिन न तो तीसरा सुसमाचार और न ही प्रेरितों के काम की पुस्तक विशेष रूप से लेखक के नाम का उल्लेख करती है। इसलिए, लूका द्वारा इसको लिखे जाने के परम्परागत दृष्टिकोण की पुष्टि करने के लिए हमें उन कारणों पर ध्यान देना चाहिए।

हम प्रेरितों के काम के लेखन-कारिता को तीन दृष्टिकोणों से पता करेंगे। सबसे पहले, हम प्रेरितों के काम की लूका के सुसमाचार के साथ तुलना करेंगे। दूसरा, लूका द्वारा इसके लिखे जाने के विषय में हम आरम्भिक कलीसियाई इतिहास और उसके गवाहों जाँच करेंगे। और तीसरा, हम नए नियम के अन्य पहलुओं पर संक्षेप में देखेंगे जो इस बात का संकेत देते हैं कि लूका ने ही इन पुस्तकों को लिखा है। आइये सबसे पहले इस बात पर ध्यान दें कि लूका के सुसमाचार से हम प्रेरितों के काम के लेखन-कारिता के बारे में क्या सीखते हैं।

लूका का सुसमाचार

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की तुलना तीसरे सुसमाचार से करते हैं, तो दो प्रकार के प्रमाण दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति ने दोनों पुस्तकों को लिखा। एक तरफ तो, दोनों ही पुस्तकों में स्पष्ट सूचना सीधे ही कही गई है जो कि इस दिशा की ओर संकेत करती हैं। दूसरी ओर, इन पुस्तकों की शैली और विषय-वस्तु से अस्पष्ट प्रमाण भी हैं। आइये हम स्पष्ट प्रमाण से आरम्भ करें जो दोनों पुस्तकों के लिए एक ही लेखक की ओर संकेत देते हैं।

सुस्पष्ट

प्रेरितों के काम 1:1 में, प्रेरितों के काम की पुस्तक की प्रस्तावना में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> **हे थियुफिलुस, मैं ने अपनी पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 1:1)।**

यहाँ लेखक "पहली पुस्तिका" के विषय में ऐसे कहता है, जिसका अर्थ यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक उसके लेखन श्रृंखला में की कम से कम दूसरी पुस्तक है। उसने यह भी संकेत दिया है कि उसने इस पुस्तक को थियुफिलुस नाम के व्यक्ति को लिखा है। अब इसी के जैसी प्रस्तावना को लूका 1:1-4 से सुनिए:

> **बहुतों ने इन बातों को जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है, जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों को देखने बाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुँचाया। इसलिए, हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके, उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ, ताकि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, अटल हैं (लूका 1:1-4)।**

एक बार फिर से, यह अनुच्छेद एक ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत करता है जिसका नाम थियुफिलुस है, परन्तु इसमें इससे पहले की पुस्तक का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

दोनों अर्थात्, प्रेरितों के काम और तीसरा सुसमाचार थियुफिलुस को समर्पित किए गए हैं, और प्रेरितों के काम की पुस्तक 'पहले पुस्तक' की ओर संकेत करती है। ये तथ्य दृढ़ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि इन पुस्तकों के लेखक ने कम से कम दो संस्करणों को लिखा, जिसमें लूका का सुसमाचार पहला संस्करण और प्रेरितों के काम दूसरा संस्करण है। वास्तव में, इन दोनों प्रस्तावनाओं के बीच का सम्बन्ध पुरातन साहित्यिक परम्परा को दर्शाता है जिसमें एक ही लेखक दो-संस्करणों के साहित्य को लिखता था। उदाहरण के तौर पर, जोसेफस, ने दो-संस्करण की साहित्यिक रचना *अगेन्स्ट अप्पीओन* वाले शीर्षक के नाम से लिखा, जिसमें दोनों ही संस्करणों में एक जैसे ही प्रस्तावना है।

इन स्पष्ट संबंधों के अलावा, प्रेरितों के काम और तीसरे सुसमाचार के मध्य में अस्पष्ट सहसम्बन्ध भी है जो इनके एक ही लेखक द्वारा रचित होने की ओर इंगित करता है। नए नियम के कई विद्वानों ने इन पुस्तकों के बीच की समानताओं की ओर संकेत किया है। कम समय हमें इनके बारे में संक्षिप्त उल्लेख करने की ही अनुमति देगा, परन्तु वे एक ही लेखक होने के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्निहित प्रमाणों को प्रदान करते हैं।

अस्पष्ट

जैसा कि हमने अभी अभी देखा, लूका 1: 1-4 यह कहता है कि लेखक ने विविध स्रोतों की जाँच की और थियुफिलुस के लिए क्रमानुसार लिखा हुआ समर्पित लेखन प्रस्तुत किया है। फिर तो यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि कई विद्वानों ने इस बात पर ध्यान दिया है कि लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक की संरचना और आकार एक जैसा है। पुस्तकों के संयोजन संरचना में भी कई समानताएं हैं। ये पुस्तकें एक प्रासंगिक शैली में आगे बढ़ती हैं, और दोनों मोटे तौर पर लगभग एक ही लंबाई की हैं, प्रत्येक एक ही मानक-आकार की पाण्डुलिपि को भरती हैं।

इस के अलावा, प्रत्येक पुस्तक में समय अवधि एक जैसी ही है। दोनों, लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकें मोटे तौर पर एक ही जितने वर्षों की अवधि को पूरा करते हैं। और दोनों ही पुस्तकों में समानान्तर विषय भी पाए जाते हैं। केवल एक उदाहरण के तौर में, सुसमाचार का चरमोतकर्ष यहूदी धर्म की राजधानी और यहूदी राजतंत्रीय शक्ति के सिंहासन यरुशलेम में गिरफ्तारी, मुकदमे, दुखभोग, मृत्यु और विजय की ओर यीशु की यात्रा के साथ होता है। और इसी के सामान्तर, प्रेरितों के काम की पुस्तक का अंत प्रेरित पौलुस की रोम की ओर यात्रा, उसकी गिरफ्तारी, मुकद्दमे और पीड़ा से आरम्भ करके उस समय के संसार की साम्राज्यवादी शक्ति की राजधानी में मसीह के सुसमाचार के बारे में उसकी विजयी घोषणा के साथ समापन होता है।

इसके साथ ही, इन पुस्तकों के बीच समानताएं हैं क्योंकि वे एक ही कहानी के भाग हैं। हम इस तथ्य के बारे में सोच सकते हैं कि लूका के सुसमाचार में ऐसी अपेक्षायें की गई हैं जो कि उस समय तक पूरी नहीं होती हैं जब तक कि प्रेरितों के काम की पुस्तक नहीं लिखी जाती है। उदाहरण के लिए, लूका के आरम्भ में ही, विश्वासयोग्य शिमोन यह घोषणा करता है कि यीशु अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश होगा। लूका 2:30-32 में उसके शब्दों को सुनें:

> **क्योंकि मेरी आँखो ने तेरे उद्धार को देख लिया है। जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है। कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो (लूका 2:30-32)।**

लूका के सुसमाचार में यीशु की सेवकाई परमेश्वर के उद्धार और इस्राएल को दी हुई प्रतिज्ञा के बारे में उल्लेख करती है। लेकिन हम केवल प्रेरितों के काम में परमेश्वर के उद्धार को महत्वपूर्ण तरीकों से अन्यजातियों के लिए प्रकाशन के प्रकाश के रूप में सेवारत होते हुए देखते हैं। ये और अन्य समानताएं इन पुस्तकों में एक ही छुटकारे वाले ऐतिहासिक दर्शन की ओर और उद्देश्य एवं विश्वास की साझे वाली भावना की ओर इंगित करती हैं। और ये समानताएं यह भी सुझाव देती हैं कि हम एक ही लेखक के कार्यों को देख रहे हैं।

आरम्भिक कलीसिया

क्योंकि अब हमने प्रेरितों के काम और लूका के सुसमाचार के एक ही लेखक होने के बारे में कुछ प्रमाणों को देख लिया है, इसलिए हम अब आरम्भ की कलीसिया के द्वारा दिए गए प्रमाण की ओर ध्यान करने के लिए तैयार हैं। दूसरी से लेकर चौथी शताब्दी ईसवी तक, आरम्भ की कलीसिया ने लूका के बारे में गवाही दी है, जो कि पौलुस के साथ सहयात्री था, कि वही दोनों प्रेरितों के काम और लूका के सुसमाचार का लेखक था। हम संक्षेप में दो तरीकों से इस प्रमाण की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम बाइबल के बारे में और इसके प्रारम्भिक लिखित पाण्डुलिपियों को देखेंगे। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि आरम्भ की कलीसिया के अगुवों ने लूका के द्वारा लेखन किये जाने के बारे में क्या कहा। आइये, हम कुछ प्राचीन पाण्डुलिपियों के प्रमाण के साथ आरम्भ करते हैं।

पाण्डुलिपियाँ

एक सबसे पुरानी पाण्डुलिपि जिसे 'पपाईरस 75' कहा जाता है, 1952 में मिस्र में खोजी गई थी। यह पपाईरस पर लिखा था और इसमें हमारे नए नियम के सबसे आरम्भ की प्राचीन पाण्डुलिपि के प्रमाण सम्मिलित किए गए हैं। शायद ई. सन् 175 और 200 के बीच के समय में नकल कर लिखी गई की गई थी, और इसमें लूका के सुसमाचार और यूहन्ना के सुसमाचार के बड़े हिस्से शामिल है। दो सुसमाचारों के पठन साम्रगी के बीच में, उनके विषय-वस्तु के दो विवरणों को लिखा गया है। लूका के सुसमाचार के समापन के बाद, पाण्डुलिपि में यह शब्द आए हैं *"इवाँगेलियोन काटा ल्योकॉन"* या "लूका के अनुसार सुसमाचार।" और इन शब्दों के तुरन्त बाद यह वाक्य आता है *"इवाँगेलियोन काटा योआनॉन," या* "यूहन्ना के अनुसार सुमसाचार।" ये टिप्पणियाँ संकेत देती हैं कि जो सामग्री "लूका के अनुसार सुसमाचार" वाले शब्दों के पहले आती है, उसकी पहचान लूका के सुसमाचार के रूप में की गई है। पाण्डुलिपि का यह प्रमाण इस बात को दर्शाता है कि बहुत शुरूआत से ही, यह विश्वास किया जाता था कि लूका ने तीसरे सुसमाचार को लिखा। और इस तर्क विस्तार के द्वारा, साथ में यह भी दर्शाता है कि प्रेरितों के काम का लेखक भी लूका है।

दूसरा, 170 से 180 ई. सन् के आसपास, मारटोरियन के टुकड़े पाए जाते हैं, जो कि नए नियम की पुस्तकों के बारे में सूची देने वाले सबसे प्राचीन जानकारी वाले दस्तावेज हैं जिन्हें आरम्भ की कलीसिया ने मानक माना है। लूका के सुसमाचार के लिए लूका के लेखक होने की पुष्टि करने के बाद, यह स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि वही प्रेरितों के काम का भी लेखक है। इसकी पंक्तियों 34 से लेकर 36 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं कि:

> **इसके अलावा, सभी प्रेरितों के कार्यों को एक ही पुस्तक में लिखा गया... लूका ने उन अलग-अलग घटनाओं को संकलित किया जो उसकी उपस्थिति में घटित हुए थे।**

यह वाक्य संकेत करता है कि दूसरी शताब्दी में, यह व्यापक तौर पर विश्वास किया जाता था कि लूका ही प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक था और उसने कम से कम कुछ घटनाओं को स्वयं देखा जो इसमें वर्णित हैं।

तीसरा, तथाकथित ऐंटाए-मारसिओनाईट की प्रस्तावना, जो कि तीसरे सुसमाचार का परिचय है, जिसे 160 से लेकर 180 ई. सन्., के आसपास लिखा गया वह लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक के बारे में इस तरह से वर्णन करता है:

> **लूका, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित हो कर, इस पूरे सुसमाचार को संकलित करता है...और इसके बाद में यही लूका प्रेरितों के काम नामक पुस्तक को लिखता है।**

इस आरम्भिक पाण्डुलिपि के अलावा, हमारे पास आरम्भ की कलीसिया के अगुवों की गवाही भी है जो यह संकेत करती हैं कि लूका तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक है।

आरम्भिक कलीसियाई अगुवे

कलीसियाई धर्माचार्य इरेनियुस, जो 130 से लेकर 202 ई. सन्., के आसपास जीवित रहे, यह विश्वास करते थे कि लूका ही तीसरे सुसमाचार का लेखक था। उन्होंने अपने साहित्यिक कार्य अगेंन्स्ट हैरेसीज़, पुस्तक 3, अध्याय 1 के खण्ड 1 में यह लिखा है कि:

> **लूका ने भी, जो पौलुस का सहकर्मी था, एक पुस्तक में उसके द्वारा प्रचार किये हुए सुसमाचार को लिखा।**

यहाँ पर इरेनियुस का संकेत प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए है जो कि उस सुसमाचार को अभिलिखित करती है जिसका प्रचार पौलुस ने किया था। उसके शब्द महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अच्छा ऐतिहासिक साक्ष्य यह संकेत देता है कि इरेनियुस को प्रत्यक्ष रूप में लूका के प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक होने का ज्ञान था।

अलैक्जैन्ड्रिया के क्लेमेंट जो कि 150 से लेकर 215 ई. सन्., के आसपास रहे, उन्होंने भी दिखाया कि लूका ने ही प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा। उन्होंने अपनी *स्ट्रोमॉटा,* या विविध मामले नामक अपनी 5वीं पुस्तक के 12 वें अध्याय में, इन शब्दों को लिखा है:

> **प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका ने पौलुस के सम्बन्ध में ऐसे कहा, "हे एथेंस के लोगो, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।"**

और टरटुलियन, जो कि 155 से लेकर 230 ई. सन्. तक रहे, उन्होंने अपने साहित्यिक कार्य *अगेंन्स्ट मारसियोन* पुस्तक 4 के अध्याय 2 में इन शब्दों को लिखा:

> **इसलिए, प्रेरितों में से, यूहन्ना और मत्ती सबसे पहले हममें विश्वास को स्थापित किया... लूका और मरकुस इसे बाद में नवीनीकृत करते हैं।**

यहाँ, टरटुलियन विशेषकर लूका को ही तीसरे सुसमाचार को ही लेखक मानते हैं।

अन्त में, प्रसिद्ध कलीसियाई इतिहासकार ईसुबीयुस ने 323 ई. सन्., के आसपास अपने लेखन *कलीसियाई इतिहास* की पुस्तक 1, अध्याय 5, के खण्ड़ 3 में उल्लेख किया है कि लूका ही प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक है। वहाँ उसने क्या लिखा है इसे सुनिए:

लूका...ने प्रेरितों के काम में जनगणना के बारे में उल्लेख किया है।

इस प्रकार की सकारात्मक स्वीकारोक्तियों के साथ ही, यह आश्चर्यजनक है कि आरम्भ की कलीसिया के साहित्य में ऐसा एक भी संकेत नहीं मिलता है कि लूका के अलावा किसी और ने लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा, यद्यपि उसे कभी भी एक प्रेरित के रूप में मनोनित नहीं किया गया। परन्तु इस तरह के सुरागों के कारण, हमारे पास विश्वास करने के कारण हैं कि आरम्भ की कलीसिया ने लूका को ही इनका लेखक होने के लिए आविष्कृत नहीं किया, परन्तु इसके बजाय जो कुछ उसे सच के रूप में प्राप्त हुआ था सिर्फ उसे ही आगे पारित कर दिया: कि लूका ने इन दोनों पुस्तकों को लिखा।

नया नियम

अभी तक हमने यह देखा कि प्रेरितों के काम और तीसरे सुसमाचार का एक ही लेखक होने की पुष्टि करने के अच्छे कारण हैं, और आरम्भ की कलीसिया ने इसके बारे में साक्षी दी है कि वह अकेला लेखक लूका ही था। अब आइए यह देखें कि हम स्वयं लूका के बारे में नए नियम के अन्य भागों से किस तरह की सूचनाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

हम दो तरीकों से इस प्रमाण की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम अपने गुमनाम लेखक के बारे में नए नियम से प्राप्त कुछ सुरागों पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम स्वयं लूका के बारे में दी गई सूचनाओं के साथ इन सुरागों की तुलना करेंगे। आइये सबसे पहले हम अपने लेखक के बारे में दिए गए सुरागों को देखते हैं।

लेखक के बारे में सुराग

जैसा कि हम पहिले कह चुके हैं, कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने नाम से स्वयं की कोई पहचान नहीं कराई है। ऐसा आभास होता है कि, उसे अपने संरक्षक थियुफिलुस के कारण नाम देने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हूई। लूका 1:3 में वह सिर्फ ऐसा कहता है कि, "*मुझे भी* यह उचित मालूम हुआ," और प्रेरितों के काम की पुस्तक 1:1 में उसने ऐसे कहा कि, "*अपनी* पहली पुस्तक में...मैंने लिखा।" लेखक यह मानता था कि उसका संरक्षक यह जानता है कि वह कौन था। और जबकि इस बात ने थियुफिलुस के लिए तो कोई समस्या उत्पन्न नहीं की, परन्तु आधुनिक पाठकों के लिए इस बात ने बहुत सारे प्रश्नों को उत्पन्न कर दिया।

इसके साथ ही, कई ऐसी बातें हैं जो कि नया नियम हमारे लेखक के बारे में हमें बताता है। सबसे पहले, वह प्रेरित नहीं था। वास्तव मं, शायद वह यीशु के स्वर्गारोहण होने के बाद विश्वास में आया था। लूका के सुसमाचार 1:1-2 में दिए गए इन विवरणों को सुनिए:

बहुतों ने उन बातों को जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुँचाया। (लूका1:1-2)

जब लेखक ने यह कहा कि यीशु के जीवन की घटनाएँ हम तक पहुँचीं, तो उसका संकेत यह है कि वह यीशु के जीवन का प्रत्यक्षदर्शी नहीं था।

दूसरा, प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका के सुसमाचार में यूनानी भाषा की लेखन शैली यह संकेत देती है कि लेखक अच्छी तरह से शिक्षित था। नए नियम की अनेक पुस्तकें यूनानी भाषा में सामान्यतया लिखी गई हैं, यहाँ तक कि वे अपरिष्कृत यूनानी भाषा की शैली में लिखी गई हैं। परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका के सुसमाचार की भाषा अपने प्रयोग में अधिक परिष्कृत शैली को दिखाता है।

तीसरा, प्रेरितों के काम की पुस्तक का अन्तिम आधा हिस्सा इंगित करता है कि लेखक पौलुस का करीबी सहयात्री था। प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों में, कहानी निरन्तर तृतीय पुरुषवाचक के रूप में है। परन्तु प्रेरितों के काम अध्याय 16 से शुरू होकर, कहानी अक्सर प्रथम-पुरुषवाचक के दृष्टिकोण का प्रयोग करती है जिनमें "हम" और "हमें" जैसे शब्दों का उपयोग किया गया है। हम इस तरह की भाषा को प्रेरितों के काम 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; और 27:1-28:16 में पाते हैं। ये अनुच्छेद संकेत देते हैं कि लेखक ने पौलुस की बाद की मिशनरी यात्राओं में पौलुस के साथ यात्रा की और पौलुस के साथ कैसरिया से रोम की यात्रा में गया।

अब जबकि हमारे पास हमारे लेखक के बारे में कुछ सुराग हैं, तो अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि ये तथ्य लूका के बारे में जो कुछ हम जानते हैं, उनसे कितनी अच्छी तरह से मिलते जुलते हैं।

लूका

आइए हम उन बातों को एक बार पुन: देखें जिन्हें हम लूका और प्रेरितों के काम के लेखक के बारे में जानते हैं: वह प्रेरित नहीं था। ऐसा आभास होता है कि वह अच्छी तरह शिक्षित था। और वह पौलुस के साथ उसकी यात्रा में सहकर्मी था। लूका के बारे में जो कुछ हम जानते हैं उसके साथ ये तथ्य कैसे जोड़ बनाते हैं? ठीक है, सबसे पहिले, लूका एक प्रेरित नहीं था। प्रेरितों ने कलीसिया के लिए नींव की भूमिका को अदा करते हुए, मसीह के विलक्षण विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए कलीसिया की स्थापना की और गलती एवं परेशानी से इसकी रक्षा की। और प्रेरितों के काम 1:21-22 के अनुसार, प्रेरितों को स्वयं यीशु द्वारा ही प्रशिक्षित किया जाना था। लेकिन लूका ने यीशु के साथ कभी भी व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात नहीं की थी और न ही कभी उस अधिकार पर दावा किया जो कि प्रेरितों से सम्बन्धित था। इसकी बजाय, वह तो पौलुस की मिशनरी यात्राओं में सहायता करने वाला एक सदस्य मात्र था। वह एक प्रेरित का सेवक था, या जैसा कि पौलुस ने फिलेमोन की आयत 24 में उसका विवरण दिया है कि वह एक प्रेरित का "सहकर्मी" था।

दूसरा, यह भी संभावना है कि लूका अच्छी तरह से शिक्षित था। हम इसका अनुमान कुलुस्सियों 4:14 से लगा सकते हैं, जहाँ पौलुस लूका की पहचान एक चिकित्सक के रूप में करता है। जबकि आज के दिनों की तरह दवा चिकित्सा नए नियम में औपचारिक रूप में एक शिक्षा प्रणाली के रूप में प्रयोग में नहीं लाई जाती थीं, पिर भी इसके लिए एक व्यक्ति में कौशल और योग्यता का होना बहुत जरूरी था।

तीसरा, लूका पौलुस के साथ यात्रा करने वाला एक सहकर्मी था। प्रेरित पौलुस कुलिस्सियों 4:14; 2 तीमुथियुस 4:11; और फिलेमोन आयत 24 में उल्लेख करता है कि लूका उसके साथ यात्रा करता था।

हम प्रेरितों के काम के लेखन-कारिता को इस तरह सारांश में बता सकते हैं। विस्तृत मात्रा में ऐतिहासिक साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक लूका ही है। लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक एक ही है। आरम्भ की कलीसिया के साक्ष्य निरन्तर लूका को ही इसके लेखक होने का हकदार मानते हैं। और बाइबल का विवरण इसी विचार से सहमत है। इन प्रमाणों के आधार पर में, हमारे पास वे सभी अच्छे कारण हैं कि हम यह विश्वास करें कि लूका ही दोनों अर्थात् तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक था। और हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि लूका के जिस विषय का उसने विवरण दिया उसके लिए उसके पास उत्कृष्ट पहुँच और निकटता थी।

ऐतिहासिक समयावधि

अब जबकि हमने लूका के लेखक होने के बारे में देख लिया है, हम प्रेरितों के कार्य की ऐतिहासिक समयावधि की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। लूका ने इसे किस समय लिखा? और उउसने किन लोगों के लिए इस पुस्तक का संकलन किया?

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के ऐतिहासिक समयावधि की जाँच करते हैं, तो हम तीन विषयों को देखेंगे। पहला, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के संकलन की तिथि पर विचार करेंगे, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि लूका ने कब प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा। दूसरा, हम इस पुस्तक के वास्तविक श्रोताओं की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम इसके श्रोताओं के सामाजिक परिवेश की खोजबीन करेंगे। इन विषयों को देखने से लूका द्वारा लिखी गई घटनाओं के साथ उसकी निकटता को स्पष्ट करने में हमें मदद मिलेगी। साथ में यह पहली शताब्दी में सुसमाचार के प्रभाव को गहन और विस्तृत रीति से समझने में हमारी सहायता करेगा। आइये इस पुस्तक के लेखन की तिथि से आरम्भ करें।

तिथि

यद्यपि इस बात पर कई तरह के विभिन्न विचार पाए जाते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक कब लिखी गई, परन्तु सामान्य अर्थों में, हम नए नियम के विद्वानों को दो मौलिक विचारधारओं में विभाजित कर सकते हैं। एक तरफ तो, कुछ ने यह तर्क दिया है कि लूका ने 70 ई. सन्. में यरूशलेम के मन्दिर के विनाश के बाद में इसे लिखा। और दूसरी तरफ, अन्य विद्धान यह तर्क देते हैं कि उसने इसे 70 ई. सन्., में मन्दिर के नाश होने से पहले लिखा। 70 ई, सन्., की दुखद घटनायें यहूदी इतिहास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थीं, और इसी कारण इन घटनाओं के संदर्भ में इन विषयों पर विचार करने में सहायकपूर्ण हो जाती है। हम इन प्रत्येक दृष्टिकोण को देखेंगे, और इस संभावना के साथ आरम्भ करेंगे कि लूका ने 70 ई. सन्., के बाद लिखा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

70 ई. सन् के बाद

वे विद्वान जो यह मानते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 70 ई. सन., के बाद में लिखी गई अपने विचारों को कई तरह के कारकों पर निर्धारित करते हैं। उदाहरण के लिए, कई यह दावा करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाया जाने वाला आशावाद 80 से लेकर 90 ई. सन्., की तिथि की ओर इशारा करता है। इस दृष्टिकोण में, प्रेरितों के काम की पुस्तक बहुत ज्यादा आरम्भ की कलीसिया के इतिहास के बारे में सकारात्मक है जो कि बहुत पहले लिख दिया गया था। इसकी बजाय, यह आरम्भ की कलीसिया की घटनाओं पर उदासीनता भरी नजर है जो कि स्वयं घटनाओं से कई वर्ष अलग होने की आवश्यकता को पाता है। परन्तु यह दृष्टिकोण उस शांत तरीके की उपेक्षा है जिसमें प्रेरितों के काम की पुस्तक कलीसिया के अंदर और बाहर की सभी तरह की समस्याओं का निपटारा करता है।

अधिकांश भाग के लिए, वे जो यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 70 ई. सन्., के बाद में लिखी गई ऐसा इसलिए करते हैं कि क्योंकि वे यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक की कुछ सामग्री यहूदी इतिहासकार जोसेफस के लेखन के ऊपर आधारित है।

जोसेफस के सम्बन्धित लेखन 79 ई. सन्., से पहिले संकलित किए गए थे, और 85 ई. सन्., से पहिले विस्तृत रूप में उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसलिए वे जो यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक जोसेफस के साहित्य के ऊपर निर्भर करती है, वह यह सार निकालते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 79 ई. सन्., से पहले लिखी गई और संभवत: 85 ई. सन्., के आसपास लिखी गई।

इस विचाराधारा की वकालत करने वाले प्रेरितों के काम और जोसेफस द्वारा लिखित साहित्य के बीच कई संबंधों की ओर संकेत करते हैं, हम उनमें से केवल चार संबंधों पर गौर करेंगे जिनका उन्होंने उल्लेख किया है।

पहला, प्रेरितों के काम 5:36 में वर्णित थियूदास, एक यहूदी क्रान्तिकारी की ओर इशारा करता है जिसके बारे में शायद जोसेफस के लेखन *ऐन्टीक्विटीस* के 20 वीं पुस्तक के 97 वें खण्ड में किया गया है। दूसरा, प्रेरितों के काम में 5:37 गलील के यहूदा क्रान्तिकारी का उल्लेख है, जो कि जोसेफुस की दुसरी पुस्तक *जूईश वार्स* के 117 और 118वें खण्ड में और उसकी *ऐन्टीक्विटीस* के18वीं पुस्तक के 1 से लेकर 8वें खण्ड में प्रकट होता है। तीसरा, प्रेरितों के काम 21:38 में बताए गए क्रान्तिकारी मिस्री का उल्लेख शायद जोसेफुस की *जूईश वार्स* की पुस्तक 2 के खण्ड 261 से लेकर 263 में प्रकट होता है, और *ऐन्टीक्विटीस* की 20वीं पुस्तक के 171वें खण्ड में प्रकट होता है। और चौथा, कुछ अनुवादकों ने यह तर्क दिया है कि प्रेरितों के काम 12:19-23 में हेरोदेस की मृत्यु का विवरण जोसेफुस की *ऐन्टीक्विटीस* 19वीं पुस्तक के 343 से लेकर 352वें खण्ड पर आधारित है।

कई अनुवादकों के बावजूद जो इस तर्क की विचारधारा को मानते हैं, हमें इस बात की ओर संकेत करना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और जोसेफस के लेखन के बीच समानता यह प्रमाणित नहीं करते कि प्रेरितों के काम की पुस्तक जोसेफस के साहित्य के ऊपर निर्भर थी। सच्चाई तो यह है कि, प्रेरितों के काम के पुस्तक में दी हुई घटनाओं के वर्णन जोसेफस के विवरणों से भिन्न है। इसलिए, ऐसी संभावना ज्यादा जान पड़ती है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और जोसेफस ने जाने-पहचाने प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन साधारणतया अलग अलग किया या एक ही सामान्य स्रोत पर निर्भर रहते हुए किया। क्योंकि उल्लिखित लोग जाने-पहिचाने प्रसिद्ध ऐतिहासिक हस्ती थे , इसलिए यह आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उन्हें एक से ज्यादा

इतिहासक साहित्य में स्मरण किया गया है। और इससे भी ज्यादा, थियूदास के मामले में हम एक बहुत ही प्रचलित साधारण नाम को देख रहे हैं। यह भी सम्भव है कि ये दो भिन्न व्यक्ति एक ही नाम से प्रचलित हों।

70 ई. सन् से पहिले

प्रेरितों के काम की पुस्तक की तिथि पर दूसरा प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि इसे 70 ई. सन्., में मंदिर के विनाश से पहले लिखा गया। इस पहले लिखे जाने की तिथि के पक्ष में कई प्रमाण हैं, परन्तु अपने उद्देश्य के लिए हम अपना ध्यान इस बात पर केन्द्रित करेंगे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्तिम दृश्य से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

प्रेरितों के काम 28:30-31 में लिखी हुई अन्तिम दो आयतों को सुनिए। वहाँ पर लूका ने पौलुस के बारे में इन शब्दों को लिखा है:

> **वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोट-टोक के बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 28:30-31)।**

प्रेरितों के काम की पुस्तक रोम में, पौलुस का घर में कैद होने के साथ बन्द होती है, जो कि बड़े हियाव के साथ मसीह के सुसमचार का प्रचार कर रहा है। यह अन्त विश्वास करने के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य है कि प्रेरितों के काम 70 ई. सन्., से पहले लिखी गई।

पहला, लूका का पौलुस की सेवकाई के बारे में विवरण एक महत्वपूर्ण घटना से पहले रूक जाता है जो कि 64 ई. सन्., में घटित हुई। 64 ई. सन्., में सम्राट नीरो ने मसीहियों पर रोम में आग लगा देने का दोष लगा दिया था और मसीहियों को सताना आरम्भ किया था। लूका के लिए इतनी बड़ी घटना का उल्लेख न करना आश्चर्य की बात होगी यदि यह उसके द्वारा प्रेरितों के काम के लिखे जाने से पहले घटित हो गई होगी।

दूसरा, पौलुस के बारे में समान्यतः माना जाता है कि वे नीरो के द्वारा कलीसिया पर लाए गए सताव के दौरान शहीद हुए थे, संभावित 65 ई. सन्., में या उसके कुछ समय बाद में। यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक इसके बाद लिखी गई थी, तो यह लगभग निश्चित है कि यह पौलुस की शहादत के बारे में अवश्य उल्लेख करती, जो कि इस पुस्तक का एक सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

तीसरा, 70 ई. सन्., में जब यहूदी मन्दिर को यरूशलेम में गिराया गया था, तो इस घटना ने यहूदियों और कलीसिया में आए हुए अन्यजातियों के बीच के सम्बन्धों पर गहरा प्रभाव ड़ाला था। प्रेरितों के काम की पुस्तक कई स्थानों पर इन सम्बन्धों के बारे में ध्यान-केन्द्रित करती है। इसलिए, यह संभावना कम ही लगती है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक मंदिर के विनाश जैसी घटना को छोड़ देती यदि यह उसके समय में घटित हो जाती।

इस तरह के तथ्यों के प्रकाश में, यह निष्कर्ष निकालना सबसे अच्छा है कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को पौलुस की बन्दीगृह में और रोम में उसकी सेवकाई के आसपास पूरा किया जो कि 60 से लेकर 62 ई. सन्., में रही थी, और जो इस पुस्तक के अन्तिम ऐतिहासिक विवरण है।

वास्तविक श्रोतागण

प्रेरितों के काम की पुस्तक की इस पहले वाली तिथि की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें अब प्रेरितों के काम की पुस्तक की ऐतिहासिक समयावधि की दूसरी विशेषता की ओर मुड़ना चाहिए: जो कि लूका के लेखन के वास्तविक श्रोतागण हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक के साथ जिन श्रोतागणों तक लूका पहुंचना चाहता था उनकी जानकारी रखना उसके कार्य को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के वास्तविक श्रोतागणों की खोजबीन हम दो तरीकों से करेंगे। पहला, हम थियुफिलुस को लिखे गये स्पष्ट समर्पण को देखेंगे। और दूसरा, हम इस संभावना को देखेंगे कि यह पुस्तक विस्तृत श्रोतागणों तक पहुँचने की चाहत से भी लिखी गई थी। आइए, हम लूका के सबसे पहले पाठक थियुफिलुस के साथ आरम्भ करें।

थियुफिलुस

लूका की प्रस्तावना संकेत देती है कि थियुफिलुस उसका संरक्षक था, वह जिसने उसे लिखने के लिए अधिकृत किया था। जैसा कि हमने, लूका 1:3 और प्रेरितों के काम 1:1 में देखा, लूका ने अपने कार्यों को थियुफिलुस को समर्पित किया। इससे आगे, लूका 1:3 में, लूका ने थियुफिलुस को हे श्रीमान् थियुफिलुस कह कर पुकारा है। लूका ने इन शब्दों "हे श्रीमान्" (या यूनानी में कारटिस्टोस) को सम्मान के लिए अभिव्यक्त किया है। इस शब्दावली ने बहुतों को यह विश्वास करने को मजबूर किया है कि थियुफिलुस एक बहुत ही धनवान संरक्षक था।

लेकिन लूका और थियुफिलुस के बीच सम्बन्ध मात्र संरक्षण से अधिक जटिल था। लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकों को पढ़ने के बाद, थियुफिलुस लूका का विद्यार्थी बन गया। हम इसे लूका के सुसमाचार की प्रस्तावना में लूका के थियुफिलुस के साथ सम्बन्धों के इस पहलू को देख सकते हैं।

लूका 1:3-4 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> **इसलिये हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूँ। कि तू यह जान ले, कि ये बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं (लूका 1:3-4)।**

जैसा कि यह अनुच्छेद संकेत करता है, लूका की पुस्तक हिस्सों में इसलिए लिखी गई थी ताकि थियुफिलुस उन बातों की निश्चितता के बारे में जान सके जैसा उसे सिखाया गया था। साधारण शब्दों में कहें, तो, लूका ने इन्हें थियुफिलुस को शिक्षा देने के लिए लिखा।

यह देखने के बाद कि लूका ने थियुफिलुस को अपना पहला पाठक होने के बारे में स्पष्ट तौर से लिखा, हमारे लिए विस्तृत मायनों में लूका के वास्तविक श्रोतागणों के बारे में विचार करना भी सहायकपूर्ण होगा।

विस्तृत श्रोतागण

नए नियम में अन्य स्थान पर जो हम पढ़ते हैं, उससे यह जानना कठिन नहीं है कि पहली शताब्दी में विस्तृत कलीसिया कई विषयों पर संघर्ष कर रही थी जिन्हें लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उल्लिखित किया है। लूका का इतिहास यहूदियों और अन्यजाति विश्वासियों के बीच झगड़े, और विभिन्न प्रेरितों और शिक्षकों के कारण विभाजन का उल्लेख करता है। उसका विवरण झूठे शिक्षकों के द्वारा फैलाये जा रहे धर्मसिद्धान्तों की गलतियों को स्पर्श करता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक कलीसिया और सरकार के बीच में चल रहे झगड़े को भी सूचित करती है। यह उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करती है जिनका सामना स्त्रियाँ और गरीब लोग कर रहे है। यह सतावों, दुखों और बन्दीगृह में डाल दिए जाने को बताती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक इस तरह के धर्म सिद्धान्तों, नैतिक और व्यावहारिक कठिनाइयों को स्पर्श करती है क्योंकि विस्तृत कलीसिया ने अपने आरम्भ के दशकों में इन विभिन्न विषयों के साथ संघर्ष किया।

क्योंकि लूका ने बहुत विस्तृत विषयों को संबोधित करने के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा, इसलिए यह अनुमान लगाना सही होगा कि उसका इरादा था कि उसके काम को कई भिन्न विश्वासियों द्वारा पढ़ा जाये। उसे थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया दोनों की उन कई चुनोतियों का सामना करने मदद करने की चिंता थी।

सामाजिक संदर्भ

प्रेरितों के काम की पुस्तक की तिथि और वास्तविक श्रोताओं पर ध्यान देने के बाद, हम तीसरी बात को सम्बोधित करने के लिए तैयार हैं: जो कि लूका के कार्य का सामान्य सामाजिक संदर्भ है, ऐसा संसार जिसमें प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा गया था। जितना अधिक हम लूका के दिनों की सामाजिक शक्तियों के बारे में समझेंगे, उतने ही बेहतर तरीके से हम इस पुस्तक की कई विशेषताओं को समझने के लिए सुसज्जित हो जाएंगे।

हम पहली शताब्दी की कलीसिया के जीवन के दो केन्द्रीय गुणों को देखने के द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक के सामाजिक संदर्भ की खोजबीन करेंगे: पहला, रोमी साम्राज्य का शासन और शक्ति; और दूसरा, कलीसिया और यहूदियों के बीच का नया सम्बन्ध। आइये सबसे पहले रोमी साम्राज्य को देखें।

रोमी साम्राज्य

जब तक लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा, उस समय तक रोमी साम्राज्य ने पूरे भूमध्य संसार पर विजय प्राप्त कर इसे अपने नियंत्रण में कर लिया था, और इसने अपने साम्राज्य की पहुँच को वर्तमान के ब्रिटेन, उत्तरी अफ्रीका और एशिया के कुछ भागों तक फैला दिया था। आरम्भ की कलीसिया के दिनों में, साम्राज्य अभी भी विस्तार कर रहा था, तथा अधिक से अधिक लोगों और क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में जोड़ रहा था। जैसे-जैसे उसने ऐसा किया, रोमी साम्राज्य ने समाज के सभी पहलुओं को अपने विशिष्ट रोमी मूल्यों, लक्ष्यों और विश्वास के साथ गहराई से प्रभावित किया।

इसमें कोई शक नहीं कि, जीते हुए प्रदेशों के ऊपर रोमी साम्राज्य के सबसे बड़े प्रभाव राजनीतिक और आर्थिक थे। रोमी साम्राज्य की प्रमुख राजनीतिक दिलचस्पियों में से एक थी कि स्थानीय अधिकारियों के ऊपर शक्तिशाली नियंत्रण करने के द्वारा साम्राज्य के भीतर शांति और विश्वासयोग्यता सुनिश्चित हो।

जीते गए राष्ट्रों को कुछ सीमा तक स्थानीय स्वायत्तता प्रदान की जाती थी, परन्तु उनके स्थानीय अधिकारियों को अक्सर बदल दिया जाता था और वे सदैव रोमी साम्राज्य के पदानुक्रम के अधीन रहते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक कैसरिया के दो रोमी राज्यपालों अर्थात् फेलिक्स और फेस्तुस का उल्लेख करती है, जिन्होंने यहूदिया की सारे देश पर कैसरिया से शासन किया। कर लेने के कार्य को देखने के अलावा, वे रोमी साम्राज्य के अपने हिस्से में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी जिम्मेदार थे।

साम्राज्य ने जीते गए देशों के लोगों में रोमन नागरिकों को जोड़ने के माध्यम से सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव का भी प्रयोग किया।

अक्सर, रोमी साम्राज्य नए जीते हुए प्रदेशों को सेवानिवृत हो रहे सैन्य बल को रहने के लिए देता था। इस रीति के द्वारा पूरे साम्राज्य भर में विश्वासयोग्य रोमी नागरिकों के परिक्षेत्र स्थापित हो गए, और इन्होंने दोनों अर्थात् सरकारी एवं सामाजिक ढाँचे में रोमी मूल्यों और प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा दिया। यही कारण है कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक समय समय पर रोम के लोगों का उल्लेख करती है। जिसे हम पिन्तेकुस्त के दिन के आरम्भ में ही, प्रेरितों के काम 2:10-11 में पढ़ते हैं, कि वहाँ पर "रोम से आए हुए लोग थे (दोनों यहूदी और यहूदी धर्म में धर्मान्तरित)।" और फिर, प्रेरितों के काम 10 अध्याय में कुरनेलियुस, परमेश्वर का डर रखने वालेएक रोमी सूबेदार ने प्रेरितों के काम में सुसमाचार को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

इस के अलावा, स्थानीय संस्कृतियाँ, रोम के लोक निर्माण, जैसे कि सड़कों, विस्तृत इमारतों और सार्वजनिक बैठकों के स्थानों से प्रभावित थे। रोमी साम्राज्य का यह पहलू बताता है कि किस तरह से पौलुस और अन्य लोगों ने अपने मिशनरी प्रयास में इतनी स्वतंत्रता और सुरक्षित रूप में यात्राएं की। प्रेरितों ने भी, जैसे-जैसे वे एक स्थान से दूसरे स्थान को गए इन सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग सुसमाचार के प्रचार के लिए किया।

आरम्भ की कलीसिया के लिए शायद रोमी साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जीते गए लोगों के धर्मों के ऊपर उनका प्रभाव था।

लूका के लेखन समय में, एक व्यक्ति पूरे रोमन साम्राज्य के केन्द्र में खड़ा था: वह था कैसर। सम्राट या कैसर को न केवल उसके लोगों और क्षेत्र के ऊपर देवता के रूप में देखा जाता था बल्कि वह लोगों के लिए *सोटेर* या बचाने वाले के रूप में भी देखा जाता था। रोमी प्रचार के अनुसार, कैसर उनके लोगों को अराजकताओं और अन्धकार में से छुटकारा देता था। और रोमी साम्राज्य के विस्तार को उसके उद्धार के विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, यानि, लोगों को स्थानीय राजाओं के अत्याचार से मुक्त करना और सब लोगों को रोम के उदार शासन के अधीन लाना।

ज्यादातर स्थानों में, जीते गए लोगों को उनकी अपनी धार्मिक प्रथाओं का पालन करते रहने की अनुमति जाती थी, परन्तु उन्हें कैसर और पारम्परिक रोमी देवताओं की श्रेष्ठता को स्वीकार करना अनिवार्य था। अब, कई तरह से, पहली शताब्दी में ज्यादातर यहूदी और मसीही विश्वासी रोम के सबसे सम्मानित नागरिक थे, परन्तु विश्वासयोग्य यहूदियों और मसीही विश्वासियों ने रोमी धर्म की सर्वोच्चता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। रोमी साम्राज्य ने यहूदी धर्म को *लिजियो लिक्टिका* या कानूनी धर्म के रूप में नामित किया था,

और जहाँ तक संभव हो उसने मसीही विश्वास को सहन किया – चाहे भले ही उसने दोनों समूहों के लोगों का दमन किया।

सरकार, लोग, लोक निर्माण और धर्म के ऊपर अपने नियंत्रण के माध्यम से, रोम ने अपने प्रभाव का हर जगह जहाँ तक संभव था प्रसार करने का प्रयास किया।

अब चुंकि हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक के सामाजिक संदर्भ को रोमी साम्राज्य के प्रभाव के प्रकाश में देख लिया है, इसलिए अब हम सामाजिक स्थिति के एक और महत्वपूर्ण आयाम की जांच करने के लिए तैयार हैं जिसमें लूका ने इसे लिखा: अविश्वासी यहूदियों और आरम्भिक मसीही विश्वासियों में बीच का सम्बन्ध।

यहूदी

हम यहूदियों और आरम्भ की कलीसिया के बीच के सम्बन्ध को पहले उनके बीच में घनिष्ट संबंध पर ध्यान देकर, और दूसरा उनके बुनियादी मतभेद की खोजबीन के द्वारा विचार करेंगे। आइये इन दो समूहों के बीच आपसी संबंधों के साथ आरम्भ करते हैं।

आरम्भ की कलीसिया यहूदी लोगों के साथ एक ही विरासत को साझा करती थी। जैसा कि स्वाभाविक ही है, आधुनिक संसार में अक्सर हमें स्वयं को स्मरण दिलाना होता है कि यीशु यहूदी थे, सभी प्रेरित यहूदी थे, और शुरूआत में, कलीसिया स्वयं लगभग पूरी तरह से यहूदी धर्मान्तरित हुए लोगों से बनी हुई थी। इस कारण, यह आश्चर्यजनक बात नहीं होनी चाहिए कि आरम्भ की कलीसिया के मन में प्रतिज्ञा किए गए यहूदी मसीहा के प्रति विश्वासयोग्यता यहूदीवाद के प्रति कुछ विश्वासयोग्यता को दिखाती है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, आरम्भ की कलीसिया में कई लोग मंदिर की आराधना सभा में भाग लेते थे, पवित्रशास्त्र सुनने के लिए यहूदी सभाघरों में मिलते थे, और कई यहूदी प्रथाओं के लिए सराहना को बनाए रखते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 13:32-33 में पौलुस के शब्दों को सुनिए:

> **और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बापदादों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिए पूरी की...(प्रेरितों के काम 13:32-33)।**

पौलुस और जो उसके साथ यात्रा करते थे, उन्होंने सभाघरों में यहूदियों के साथ स्वयं की पहचान पूर्वजों को "हमारे पिता" कह कर और हम विश्वासियों को उनकी सन्तान कह कर की।

इसके अतिरिक्त, आरम्भ की कलीसिया और यहूदी समाज बड़े पैमाने पर एक ही पवित्रशास्त्र के प्रति प्रतिबद्ध थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, मसीह विश्वासी लोग निरन्तर पवित्रशास्त्र की दोहाई देते थे जब भी वे यहूदी संदर्भों में सुसमाचार का प्रचार करते थे।

प्रेरितों के काम 17:1-3 में बताता है कि पौलुस किस तरह पवित्रशास्त्र से हवाला देता है जब वह यहूदियों को मसीह का प्रचार कर रहा था। वहाँ पर लूका के शब्दों को सुनिए:

> **फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया। और उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि**

मसीह का दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है (प्रेरितों के काम 17:1-3)।

इस के अलावा, मसीहियत और यहूदी धर्म के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध के परिणामस्वरूप यहूदी अधिकारियों और आरम्भ की कलीसिया के बीच महत्वपूर्ण आपसी बातचीत पैदा होती है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, मसीह के सुसमाचार के प्रचार में आरम्भ की कलीसिया के साहस ने यहूदी अधिकारियों के साथ संघर्ष की स्थीति को पैदा किया। परन्तु जितना अधिक सम्भव हो सका, आरम्भ के मसीही विश्वासियों ने यहूदी अगुवों को स्वीकार किया और उनका विरोध केवल उसी समय किया जब वे उन्हें परमेश्वर के आदेशों की अवज्ञा करने के लिए आदेश देते थे।

यहूदी लोगों और आरम्भ की कलीसिया के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद, वे फिर भी बुनियादी मतभेदों के कारण वे अलग पहचाने जाते थे।

सबसे पहले और सबसे मौलिक, मसीही विश्वासी और अविश्वासी यहूदी यीशु के व्यक्तित्व और उनके कार्यो पर असहमत थे। कलीसिया घोषणा करती थी कि यीशु ही मसीह थे जिन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, और सारी सृष्टि को वह पुन: बहाल कर रहा है, जिसकी शुरूआत उसने मृतकों में से अपने जी उठने के साथ की है। परन्तु अविश्वासी यहूदियों के लिए यह मानना असम्भव था कि अपराधी के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है। इस मतभेद ने मसीह विश्वासियों और अविश्वासियों में दरार को उत्पन्न कर दिया जो कि आज के दिन तक निरन्तर बनी हुई है।

दूसरा, जबकि आरम्भ की कलीसिया और यहूदी अगुवे इब्रानी बाइबल के अधिकार पर सहमति थे, लेकिन वे विशेष रूप से यीशु के सम्बन्ध में, इब्रानी पवित्रशास्त्रों की सही व्याख्या पर कठोरता के साथ असहमत थे। आरम्भ की कलीसिया विश्वास करती थी कि इब्रानी पवित्रशास्त्रों में आने वाले मसीहा के लिए की गई आशा यीशु में पूरी होती है, परन्तु अविश्वासी यहूदी लोगों ने इस समझ को स्वीकार करने से इन्कार किया। यहूदी धर्म के भीतर ही कई सम्प्रदाय थे जो कई तरह के विचारों को मानते थे, परन्तु उनमें से अधिकांश ने यह स्वीकार करना असम्भव पाया कि यीशु पुराने नियम के मसीहा की आशाओं को पूरा करता है।

तीसरे स्थान पर, पहली शताब्दी की आरम्भ की कलीसिया और यहूदी लोग इस बात पर मतभेद रखते थे कि अन्यजातियों के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा हो। अधिकांश बातों के लिए, चौकस यहूदी लोग अन्यजातियों के साथ संगति नहीं रखते थे। परन्तु दूसरी ओर, कई खतनारहित अन्यजाति के लोग यहूदी धर्म के नैतिक शिक्षा और मान्यताओं की ओर इतना ज्यादा आकर्षित थे कि वे स्थानीय यहूदी सभाओं में स्वयं को संलग्न रखते और परमेश्वर से डरने वालों के रूप में जाने जाते थे। परमेश्वर का डर रखने वालों को दूसरे अन्यजातियों से ज्यादा सम्मान प्राप्त था, लेकिन वे यहूदी समुदाय के पूर्ण सदस्य नहीं थे। अन्यजाति के व्यक्ति यहूदी धर्म में धर्मान्तरित हुए थे, लेकिन इसमें दीक्षा संस्कार में से जाना शामिल था, जिसमें बपतिस्मा और खतना और यहूदी परम्पराओं का पालन करना निहित था।

जबकि आरम्भ की कलीसिया के विश्वासियों ने अन्यजातियों के प्रति अपना व्यवहार इसी समझ के साथ आरम्भ किया, परन्तु वे धीरे धीरे समझे कि अन्यजाति लोग जो मसीह के पीछे चल रहे हैं, उन्हें कलीसिया में पूर्ण सदस्यता का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा से नए प्रकाशन के द्वारा, आरम्भ की कलीसिया ने यह निर्धारित किया कि मसीह में विश्वास को व्यक्त करना और बपतिस्मा लेना ही मसीही कलीसिया में पूर्ण सदस्यता के लिए पर्याप्त था। इसलिए, प्रेरितों ने दोनों यहूदियों एवं अन्यजातियों के लिए

मसीह की सार्वभौमिक प्रभुता के सुसमाचार को प्रचार करने की अपनी रीति बनाई, और जैसे जैसे कलीसिया बढ़ी, उन्होंने दोनों प्रकार के लोगों के वरदानों एवं सेवकाई को ग्रहण किया वे समझ गए कि परमेश्वर अन्यजातियों को राज्य की आशा को पूरी करने के लिए प्रयोग कर रहा है जो कि उसने पुराने नियम में अपने लोगों को दिया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं, कि यह बात अविश्वासी यहूदियों और आरम्भ के मसीह विश्वासियों के बीच कई तरह के संघर्ष को ले आया।

उस समय के बारे में जब लूका ने लिखा, उन श्रोताओं के बारे में जिन्हें उसने लिखा, और उस सामाजिक संदर्भ के बारे में जिसमें उसने लिखा, इन कुछ विवरणों को जानने से प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्ययन में हमें बहुत मदद मिलेगी। हम उन समस्याओं की सराहना करने के लिए, जिन्हें लूका ने सम्बोधित किया है, उनके समाधान को समझने के लिए, और आज के हमारे अपने जीवन में उन्हें लागू करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो पाएंगे।

धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि

अब चुंकि हमने प्रेरितों के काम की ऐतिहासिक संरचना और लेखन के बारे में जाँच कर ली है, इस लिए अब हम इस अध्याय के तीसरे मुख्य विषय की खोजबीन के लिए तैयार हैं, जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्टभूमि है।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो बहुत सारे धर्मवैज्ञानिक प्रश्न हमारे मन में आते हैं। लूका ने कहाँ से अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को सीखा? किस तरह उसने यह निर्धारित किया कि किस बात को इस पुस्तक में लिखा जाए और किस बात को छोड़ दिया जाए? कौन से व्यापक सिद्धान्तों ने उसके लेखन कार्य को निर्देशित किया था? ठीक है, इन प्रश्नों के उत्तर स्वयं लूका के धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में पाया जा सकता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्टभूमि पर हमारा विचार विमर्श तीन भागों में विभाजित होगा। पहला, हम लूका के धर्मविज्ञान की नींवों को पुराने नियम में खोजेंगे। दूसरा, हम ध्यान देंगे कि कैसे उसका धर्मविज्ञान आने वाले मसीह के द्वारा परमेश्वर के राज्य के बारे में उसके विश्वासों से प्रभावित था। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे लूका का सुसमाचार, जो कि लूका के कार्य का प्रथम संस्करण है, प्रेरितों के काम की पुस्तक को समझने में हमारी सहायता करता है। आइये प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए पुराने नियम की नीवों में से खोजने के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

पुराने नियम ने लूका के साहित्यिक कार्य को कम से कम दो तरीकों से प्रभावित किया। सबसे पहले स्थान पर, सामान्य रूप से लूका इतिहास के प्रति पुराने नियम के दृष्टिकोण से बहुत ज्यादा प्रभावित था। और दूसरे स्थान पर, वह विशेष तौर पर इसके द्वारा इस्राएल के इतिहास के प्रयोग करने को लेकर बहुत ज्यादा प्रभावित था। आइये सबसे पहले यह देखें कि इतिहास के प्रति पुराने नियम का दृष्टिकोण कैसे लूका के धर्मविज्ञान को सामान्य रीति से सूचित करता है।

इतिहास

अपने प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य *पेन्सिस* में, 17 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध मसीह दार्शनिक ब्लेज़ पास्कल उन तीन महान् सत्यों का वर्णन करते हैं जिन्हें पूरे इतिहास भर में मानव जाति ने मान्यता दी है। सबसे पहले, वह सृष्टि की महिमा और सौंदर्य के बारे में इंगित करता है वह आश्चर्य जो ब्रह्माण्ड में व्याप्त है क्योंकि परमेश्वर ने सब चीजों को अच्छा बनाया है। दूसरा, वह सृष्टि की मूल महिमा और अपने वर्तमान दुख और भ्रष्टता के बीच आश्चार्यचकित करनेवाले संघर्ष की बात करता है। और तीसरा, पास्कल छुटकारे की बात करता है, उस आशा की, जिसमें इस संघर्ष का समाधान हो जाएगा।

पास्कल के चिंतन पुराने नियम द्वारा संसार के इतिहास की तीन अवस्थाओं सृष्टि, पाप में गिरना और छुटकारे वाले विभाजन के सामान्तर हैं। और प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका ने आरम्भ की कलीसिया के बारे में उन तरीकों में लिखा जो इतिहास के ऊपर इस तीनपक्षीय दृष्टिकोण को प्रकट करता है।

सृष्टि की समयावधि पर ध्यान दें। उत्पति 1 में, परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय राज्य के विस्तार के लिए संसार को तैयार किया। उसने ब्रह्माण्ड के रचे जाने का आदेश दिया; अदन में एक स्वर्ग को बनाया; उस स्वर्ग में, अपने राजसी स्वरूप में रचे, मानवता को रखा, मानव जाति को रखा; और मानव जाति को फलने फूलने का और पृथ्वी को अपने अधीकार में लेने का आदेश दिया, अदन से आरम्भ होते हुए संसार की छोर तक। संक्षेप में, परमेश्वर पृथ्वी पर अपने राज्य के पूर्ण विकास के लिए मंच तैयार करता है।

पुराने नियम के इस महत्वपूर्ण विचार के बारे में लूका की जागरूकता प्रेरितों के काम की पुस्तक के कई स्थानों में स्पष्ट दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, 4:24-30 में, पतरस और यूहन्ना ने इस पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर की सृष्टि के प्रमाण में उसके राजकीय स्वामित्व के बारे में बोला है। 14:15-17 में, पौलुस और बरनबास ने जातियों पर परमेश्वर के शासन के लिए सृष्टि को आधार के रूप में वर्णन किया। 7:49 में, स्तिफनुस ने जोर देकर कहता है कि परमेश्वर ने इस संसार को अपनी राजकीय चौकी के रूप में रचा है। प्रेरितों के काम 17:24-27 में पौलुस के शब्दों को सुनिये:

> **जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता... उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है। कि वे परमेश्वर को ढूँढें, कदाचित् उसे टटोलकर पा जाएँ तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं (प्रेरितों के काम 17:24-27)।**

इस अनुच्छेद के अनुसार, पौलुस की सुसमाचार की सेवकाई के लिए पृष्ठभूमि सृष्टि तक पहुँच गई थी। परमेश्वर वह प्रभु है जिसने संसार और जो कुछ इसमें है उसको बनाया। उसने इस संसार को इस तरह से बनाया ताकि मनुष्य उसको ढूँढे, उस तक पहुँचे और उसको पाये। पौलुस की सुसमाचार की सेवकाई उन उद्देश्यों से विकसित हुई जिन्हें परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के समय स्थापित किया था। अपनी पुस्तक में इन विवरणों को सम्मिलित करके, लूका यह इंगित करता है कि सृष्टि का विषय आरम्भ की कलीसिया के लिए उसकी अपनी समझ के लिए महत्वपूर्ण था।

कुछ इसी तरह से, पाप में मानवता की गिरावट के बारे में लूका की जागरूकता भी प्रेरितों के काम की पुस्तक में अग्रभूमि के रूप में आती है। जैसा कि हम जानते हैं, उत्पति 3 हमें सीखाता है कि, परमेश्वर द्वारा मानव जाति के रचने के बाद, आदम और हव्वा ने उसके विरूद्ध विद्रोह किया। और इसका प्रभाव जबरदस्त था। पुराने नियम के अनुसार, मानव जाति की इस संसार में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका थी कि उसका पाप में गिरना पूरे मानव जाति को मृत्यु के अभिशाप की अधीनता में ले आया और पाप ने सम्पूर्ण सृष्टि को भ्रष्ट कर दिया।

लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के कई स्थानों में पाप की दुर्दशा के बारे में लिखा है। हम पाप में गिरावट के संदर्भों को पतरस के संदेशों में 2:38 और 3:19 में पाते हैं, यहूदी महासभा के सामने 5:29-32 में अपना बचाव करने में, इफिसियों के अगुवों को 20:18-35 में दिए पौलुस के शब्दों में, और प्रेरितों के काम 26:20 में राजा अग्रिप्पा के सामने दिये गए पौलुस के भाषण में।

प्रेरितों के काम की पुस्तक बार बार बताती है कि सृष्टि में जो कुछ है - अर्थात् भौतिक संसार, हमारे आर्थिक ढाँचे, हमारी राजनीतिक तंत्र प्रणाली, और यहाँ तक कि स्वयं कलीसिया भी – मानव जाति के पाप में गिरने के कारण दुख उठाती है।

आनन्द की बात यह है कि, प्रेरितों के काम में लूका का दिया गया इतिहास यह इंगित करता है कि वह न केवल पुराने नियम में सृष्टि और पतन के बारे में दी गई शिक्षा पर विश्वास करता है, परन्तु छुटकारे के बारे में जो कुछ पुराना नियम कहता है उसे भी स्वीकार करता है। मानवता और सृष्टि को चाहे भले ही बुरी तरह से पाप ने भ्रष्ट कर दिया हो, लूका जानता था कि परमेश्वर ने संसार को बिना किसी आशा के यों ही नहीं छोड़ दिया है।

पुराना नियम यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर अपने लोगों को पाप के श्राप से उस समय से छुटकारा दे रहा या बचा रहा है जबसे इसने संसार में प्रवेश किया है। परन्तु इससे भी बढ़कर, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने उस दिन की भी भविष्यद्वाणी की है जब पाप और इसके श्राप को इस सृष्टि से पूरी तरह से सफाया कर दिया जाएगा। जब लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा रहा है, तो वह निरन्तर अपने उस विश्वास को प्रदर्शित करता है कि यह छुटकारा इस संसार में मसीह के उद्धार वाले कार्य के माध्यम से आ रहा था। यह विषय पूरे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिखाई देता रहता है।

कुछ एक हवाले, जिनमें हम छुटकारे के इन विषयों को पाते हैं: 2:21-40 में पतरस का सन्देश; 5:29-32 में यहूदी महासभा के आगे प्रेरित का बचाव; 11:14 में कुरनेलियुस को स्वर्गदूत द्वारा कहे गए शब्द; 13:23 में पिसिदिया अन्ताकिया के यहूदी आराधनालय में पौलुस का भाषण; 15:7-11 में यरूशलेम की सभा में पतरस का तर्क, और 16:30-31 में पौलुस और सीलास द्वारा फिलिप्पियों के दरोगा को कहे गए शब्द।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि जब लूका ने इसे लिखा तब वह संसार के इतिहास के प्रति पुराने नियम के दृष्टिकोण से बहुत ज्यादा प्रभावित था। इसीलिए वह अक्सर पहली शताब्दी से उन क्षणों का विवरण देता है जिनमें संसार के इतिहास का व्यापक लक्ष्य सृष्टि से आरम्भ हो कर, पाप में पतित होने से लेकर, मसीह के छुटकारे में प्रतिबिम्बित करता है।

अब क्योंकि हमने इतिहास के प्रति पुराने नियम के दर्शन को सामान्य तौर पर देखा लिया है, इसलिए अब हम विशेष रूप से इस्राएल के इतिहास के प्रति इसके दर्शन को देखने के लिए तैयार हैं, और जिस तरह से लूका ने इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है वह इस विशेष राष्ट्र के इतिहास पर निर्भर करता था।

इस्राएल

जब लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिख रहा था तो ऐसे कई अनगिनित तरीके हैं जिनके द्वारा वह इस्राएल के इतिहास पर निर्भर करता है। उदाहरण के तौर पर, हम अपने विचार विमर्श को इस्राएल के इतिहास की तीन घटनाओं तक सीमित रखेंगे: परमेश्वर का अब्राहम को चुनना, मूसा के नेतृत्व में निर्गमन, और दाऊद के राजवंश की स्थापना। सबसे पहले, विचार करें कि परमेश्वर द्वारा अब्राहम का चुनाव किस तरह से लूका के इतिहास को सूचित किया।

उत्पति 12:1-3 बताता है कि परमेश्वर ने अब्राहम को विशेष राष्ट्र का पिता होने के लिए चुना। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> **यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम बड़ा करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे" (उत्पति 12:1-3)।**

इन आयतों के अनुसार, परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए दो मुख्य उद्देश्यों के लिए बुलाया।

एक तरफ तो, अब्राहम बड़ी जाति का पिता होगा, प्रसिद्ध होगा, और कई आत्मिक और सांसारिक आशीषों को प्राप्त करेगा। अब्राहम और उसके बाद उसके वंश के लिए परमेश्वर की आशीषें प्रतीकात्मक तौर पर यह प्रदर्शित करने के लिए थी कि परमेश्वर के उद्धार में आशा है, यहाँ तक कि पाप में पतित इस संसार में भी।

परन्तु दूसरी ओर, परमेश्वर की बुलाहट उससे भी बहुत आगे तक गई जिसे अब्राहम और उसके वंशज प्राप्त करेंगे। अब्राहम के माध्यम से, पृथ्वी पर सभी लोग आशीषें पाएंगे। अब्राहम और उसके वंशज पृथ्वी के सभी परिवारों के लिए दिव्य आशीर्वाद का एक माध्यम बनेंगे।

अब्राहम का परमेश्वर द्वारा चुनाव का ये दोतरफा लक्ष्य प्रेरितों के काम में लूका की सोच का आधार है। एक ओर, लूका निरन्तर यह सूचना देता है कि कैसे मसीह में उद्धार की आशीष यहूदियों मिली हैं, जो कि अब्राहम का वंशज थे, और इस तरह उनके महान कुलपिता को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ पूरी हुई है।

परन्तु दूसरी ओर, लूका ने इस बात पर भी ध्यान केन्द्रित किया है कि कैसे यहूदी विश्वासी मसीहों ने सुसमाचार को अन्यजातियों तक पहुँचाया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में बार बार, लूका ने यह वर्णन किया है कि फिलिप्पुस, पतरस, पौलुस और बरनबास जैसे यहूदी लोग कैसे उद्धार के सुसमाचार को अन्यजाति के संसार में लेकर गए। यह भी अब्राहम को परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा को पूरा करता है।

दूसरे स्थान पर, प्रेरितों के काम में लूका का दृष्टिकोण मूसा और मसीही कलीसिया के बीच के सम्बन्ध की उसकी समझ को भी दिखाता है। परमेश्वर की ओर से छुड़ानेहारा होने के नाते, मूसा ने मिस्र की दासत्व में से इस्राएलियों का नेतृत्व किया, इस राष्ट्र को परमेश्वर की व्यवस्था दी, और उन्हें व्यवस्था के प्रति जवाबदेह ठहराया। और इसी व्यवस्था में, मूसा ने यह भविष्यद्वाणी की कि, पाप के उनके दासत्व से अपने लोगों को मुक्त कराने के लिए परमेश्वर एक दिन उसके जैसा एक अन्य भविष्यद्वक्ता भेजेगा। और जैसा कि लूका ने प्रेरितों के

काम में इंगित किया है, मूसा के जैसा यह भविष्यद्वक्ता, यीशु है। स्तिफनुस के शब्दों को जो कि प्रेरितों के काम 7:37-39 में दिए गए हैं सुनिए:

> **मूसा... ने इस्राएलियों से कहा, "कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा। यह वही है, जिस ने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उस से बातें की, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुँचाए। परन्तु हमारे बापदादों ने उस की मानना न चाहा; बरन उसे हटाकर अपने मन मिस्र की ओर फेरे (प्रेरितों के काम 7:37-39)।**

स्तिफनुस के दृष्टिकोण से, यीशु वह भविष्यद्वक्ता था जिसके बारे में मूसा ने भविष्यद्वाणी की थी। इस कारण, जैसा कि प्राचीन इस्राएल ने किया था वैसे ही यीशु का इन्कार करना मूसा और व्यवस्था का इन्कार करना था। मूसा और व्यवस्था के प्रति सच्चे समर्पण के लिए एक व्यक्ति को मसीह पर भी विश्वास करना अवश्य था।

और इस बात पर ध्यान दें कि कैसे लूका ने यहूदी अगुवों को दिअ गए पौलुस के इन शब्दों को प्रेरितों के काम 28:23 में सारांशित किया है:

> **तब उन्होंने उसके लिए एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा समझाकर भोर से साँझ तक वर्णन करता रहा (प्रेरितों के काम 28:23)।**

पौलुस और बाकी की आरम्भ की कलीसिया के लिए, मूसा और व्यवस्था का स्वीकार किया जाना मसीह में विश्वास के लिए नींव थी। और इस विश्वास ने उस लेख को प्रभावित किया जो लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा।

तीसरे स्थान पर, पुराने नियम में वर्णित दाऊद के राजवंश लूका प्रभावित था। पुराने नियम के किसी अन्य विषय की कल्पना करना जो लूका के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण था वह यह कि इस्राएल पर शासन करने के लिए स्थायी राजवंश के रूप में दाऊद के घराने का स्थापित होना।

जब पुराने नियम में इस्राएल एक साम्राज्य के रूप में बड़ा, तो अपने लोगों का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर ने दाऊद के घराने को स्थाई राजवंश के रूप में चुना। परन्तु पुराने नियम एक ऐसे दिन की भी आशा में था जब दाऊद का घराना परमेश्वर के राज्य को इस्राएल से लेकर पृथ्वी की छोर तक बढ़ाएगा।

जैसा कि हम भजन संहिता 72:8, 17 में पढ़ते हैं:

> **वह समुद्र से समुद्र तक, और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा...उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा, जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा (भजन संहिता 72:8, 17)।**

जैसा कि ये आयतें प्रकट करती हैं, यह अब्राहम के वंशज दाऊद के द्वारा होगा कि वह संसार के लिए आशीष का कारण बनेगा। परन्तु दाऊद स्वयं इसको पूरा नहीं करेगा। इसकी बजाय, उसके वंशज में से एक पूरी दुनिया पर अपने उदार, शान्तिपूर्ण शासन का विस्तार करने के लिए राजा होगा।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका दाऊद के घराने से पाई जाने वाली आशा से गहराई में आकर्षित है। उसने समझ लिया था कि यीशु दाऊद का पुत्र, परमेश्वर के राज्य का राजकीय शासक था, जो कि अपने राज्य को कलीसिया के माध्यम से यरूशलेम से लेकर पृथ्वी के छोर तक फैला रहा था।

उदाहरण के लिए, याकूब के शब्दों को सुनिए जो उसने यरूशलेम की सभा में कहे, जिन्हें हम प्रेरितों के काम की पुस्तक 15:14-18 में पाते हैं:

> **परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले। और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि "इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा। इसलिये कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढें।" यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है (प्रेरितों के काम 15:14-18)।**

यहाँ पर याकूब आमोस 9:11-12 का हवाला देता है, जहाँ पर आमोस भविष्यद्वाणी करता है कि परमेश्वर दाऊद के राजवंश को पुन: स्थापित करेगा और उसके राज्य को अन्यजातियों के राष्ट्रों तक फैला देगा। जैसा कि उसने यहाँ पर इंगित किया है, याकूब ने यह विश्वास किया कि अन्यजातियों में सुसमाचार की सफलता पुराने नियम की आशाओं की पूर्णता थी।

लूका चाहता था कि उसके पाठक यह समझ लें कि यीशु अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं का वारिस था, मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता और दाऊदवंशीय अन्तिम राजा था। यीशु अपने सिंहासन पर विराजमान हुआ है और सुसमाचार के प्रचार, और कलीसिया के विकास के द्वारा इस संसार को जीत रहा है, और जैसा कि पुराने नियम में पहले से ही भविष्यद्वाणी कर बताया था, वह उद्धार के अपने राज्य को यरूशलेम से लेकर पृथ्वी के अन्तिम छोर तर फैला रहा है।

परमेश्वर का राज्य

लूका की पुराने नियम पर निर्भरता को देख लेने के बाद, हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि कैसे परमेश्वर का मसीहा वाला राज्य प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्टभूमि में योगदान देता है।

परमेश्वर के राज्य के ऊपर हमारे विचार विमर्श तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम मसीहा वाले यहूदी धर्मविज्ञान पर ध्यान देंगे जो कि पहली शताब्दी में प्रचलित था। दूसरा, हम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के धर्मविज्ञान पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम संक्षेप में इन दृष्टिकोणों का मसीही विश्वासी की मसीहा वाले धर्मविज्ञान से तुलना करेंगे जिसे लूका ने समर्थन दिया है। आइये यहूदी धर्मविज्ञान के दृष्टिकोण से आरम्भ करें।

यहूदी धर्मविज्ञान

पाँचवीं शताब्दी ई. पूर्व., में पुराने नियम की अंतिम पुस्तकों के लिखे जाने के बाद, इस्राएल आत्मिक अन्धकार के युग में प्रवेश करता है। कई सौ वर्षों से, इस्राएलियों की एक बड़ी सँख्या प्रतिज्ञा किए हुए देश से बाहर जीवन यापन कर रहे थे, और जो देश में बचे हुए रह गए थे उन्होंने अन्यजाति के शासकों से बहुत ज्यादा अत्याचार सहा। सबसे पहले बाबुल के हाथों, फिर मादी और फारसी, फिर यूनानी और अब अन्ततः रोमियों से। दुखों के लम्बे इतिहास के परिणामस्वरूप, यह आशा कि परमेश्वर इस्राएल में एक छुटकारा देने वाला मसीहा भेजेगा, यहूदी धर्मविज्ञान में एक सबसे ज्यादा प्रबल होती विचारधारा बन गई थी।

यहूदियों की मसीह के बारे में आशा ने कई अलग अलग दिशाओं को ले लिया। उदाहरण के लिए, जलोती अर्थात् उग्रपंथी वाले विश्वास करते थे कि परमेश्वर इस्राएली लोगों से चाहता है कि रोमी अधिकारियों के विरूद्ध विद्रोह को बढ़ाने के द्वारा वे मसीह के आगमन के दिन में प्रवेश को तेज कर सकते थे। विभिन्न रहस्योदघाटन् विचारधारा वाले समूह यह विश्वास करते थे कि परमेश्वर अलौलिक तरीके से उनके शत्रुओं को नाश करने के लिए हस्तक्षेप करेगा और अपने लोगों को विजेताओं के रूप में स्थापित करेगा। वहाँ इस्राएल में व्यवस्था के प्रति कट्टर लोग थे, जैसे कि लोकप्रिय फरीसी और सदूकी लोग, जो यह विश्वास करते थे कि परमेश्वर तब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा जब तक इस्राएल व्यवस्था के प्रति पूर्ण आज्ञाकारी नहीं बन जाता। प्रेरितों के काम की पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर, लूका यह उल्लेख करता है कि कई यहूदियों ने मसीहा वाले राज्य की इस मसीही विश्वासियों की विचारधारा को मानने से इन्कार कर दिया था।

यद्यपि मसीहा के लिए यहूदियों में कई तरह की आशाएँ थी, लूका ने यह देखा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के द्वारा यहूदी धर्मविज्ञान में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक दोनों यह इंगित करते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने सच्चे पश्चाताप के लिए बुलाहट दी, और शुभ सन्देश की घोषणा की कि मसीह परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर लाने वाला था। और इससे भी बढ़कर, यूहन्ना ने सही मायनों में यीशु की पहचान मसीहा के रूप में की। लूका 3:16-17 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के इन शब्दों को सुनिए:

> **तो यूहन्ना ने उन सब से कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोलू सकूँ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; परन्तु गेहूँ को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा; परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा" (लूका 3:16-17)।**

यहाँ पर यूहन्ना ठीक ही मसीहा के बारे में घोषणा करता है कि मसीहा पवित्र आत्मा की महान् आशीषों और शुद्धता को लाएगा, जिसमें न्याय भी सम्मिलित है। परन्तु वह इस गलत धारणा में था कि मसीहा इस कार्य को अभी एकदम से ही करेगा।

यू हन्ना पहले से नहीं देख सका कि मसीहा संसार में उद्धार और न्याय को कई चरणों में लाएगा। बाद में, यूहन्ना इस तथ्य को लेकर पशोपेश में था कि यीशु ने अभी तक कुछ भी ऐसा कार्य नहीं किया जिसके बारे में यहूदी धर्मशास्त्रियों ने आशा की थी कि मसीह ऐसा करेगा। यूहन्ना इतना ज्यादा परेशान हो गया था कि उसने यीशु से यह पूछने के लिए दूतों को भेजा कि क्या वह वास्तव में मसीहा था कि नहीं।

लूका 7:20-23 में, जिस तरह से लूका ने उनके प्रश्न और यीशु के उत्तर का विवरण दिया उसको सुनिए:

> **उन्होंने उसके पास आकर कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास पूछने के लिए भेजा कि, 'क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट देखें?'...और उसने उनसे कहा कि, 'जाकर यूहन्ना से कह दो कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। धन्य है वह जो मेरे विषय में ठोकर न खाए।" (लूका 7:20-23)।**

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को दिए अपने उत्तर में, यीशु ने यशायाह की पुस्तक में मसीहा से सम्बन्धित कई भविष्यवाणियों का हवाला दिया। उसने ऐसा यूहन्ना को आश्वस्त करने के लिए किया कि वह पुराने नियम की मसीहा वाली भविष्यद्वाणियों की विभिन्न आशाओं को पूरा करने की प्रक्रिया में लगा हुआ था, यद्यपि उसने अभी तक उन्हें पूरा नहीं किया था। यीशु ने यूहन्ना को उत्साहित भी किया कि जिस तरह से मसीहा का कार्य प्रगट हो रहा वह उससे अपने विश्वास में किसी भी तरह से न गिरे।

संक्षेप में, यीशु के मसीहा वाला मिशन जैसी आशा की गई थी उससे बहुत ज्यादा भिन्न था। यहूदियों की मसीहा वाली आशाएँ मसीह के शासन के अधीन एक अतिशीघ्र सांसारिक राजनैतिक राज्य की स्थापना की ओर देख रही थी, उस राज्य के समान जिसमें शताब्दियों पहले दाऊद ने शासन किया था। परन्तु यीशु ने अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान इस तरह के राज्य की स्थापना करने की कोई कोशिश नहीं की।

यहूदियों के मसीहा वाले इस धर्मविज्ञान की समझ के साथ और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दृष्टिकोणों को अपने ध्यान में रखते हुए, हम अब मसीहा और परमेश्वर के राज्य के आरम्भिक मसीही धर्मविज्ञान को देखने के लिए तैयार हैं।

मसीही धर्मविज्ञान

लूका के साहित्य में, जैसा कि बाकी के नए नियम में है, मसीही विश्वास का मसीहा वाला धर्मविज्ञान मसीही सुसमाचार या शुभ सन्देश से निकटता के साथ सम्बन्धित है। हम नए नियम के सुसमाचार के संदेश को इस तरह से सारांशित कर सकते हैं:

> **सुसमाचार यह घोषणा है कि यीशु, जो मसीहा है उसके व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर आया है, और यह अपने बड़े समापन की ओर बढ़ रहा है, जैसे जैसे परमेश्वर उन लोगों को मुक्ति प्रदान कर रहा है जो यीशु को मसीहा के रूप में मान रहे हैं और उस पर भरोसा रख रहे हैं।**

आप ध्यान देंगे कि सुसमाचार का सन्देश दो आवश्यक विचारों को स्पर्श करता है। एक ओर तो, हम वह पाते हैं जिसे हम मसीही सुसमाचार का विषयपरक पहलू कह सकते हैं। परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी में यीशु के कार्य और व्यक्तित्व के द्वारा आता है। लूका ने विश्वास किया कि मसीहा के रूप में, यीशु ने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का अन्तिम चरण आरम्भ कर दिया है, और यह कि एक दिन वह जो कुछ उसने आरम्भ किया है उसे पूरा करने के लिए वापस आएगा।

और दूसरी ओर, नए नियम के सुसमाचार सन्देश में बहुत ज्यादा व्यक्तिपरक पहलू भी हैं। इसने घोषणा की है कि जैसे जैसे परमेश्वर उन लोगों को उद्धार दे रहा है जो यीशु को मसीहा के रूप में मान रहे और विश्वास कर रहे, परमेश्वर के राज्य का अन्तिम चरण इसके महान समापन की ओर बढ़ता चला जा रहा है। जैसे-जैसे सुसमाचार उन लोगों के हृदयों को स्पर्श करता है जो विश्वास करते हैं और उनको उस उद्धार में ले आता है जिसे यीशु ने पूरा किया है, तो परमेश्वर के राज्य का शासन इस संसार में आगे बढ़ता है

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका सुसमाचार के इन दोनों पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। विषयपरक पहलू की ओर, मसीह में उद्धार वाले परमेश्वर के महान कार्य की वास्तविकताओं पर उसने जोर दिया। उसने कलीसिया के प्रचार-घोषणा को लिखा कि यीशु अपने लोगों के पापों के लिए मरा, कि उसको मृतकों में से जिलाया गया है, कि वह पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होकर राज्य करता है, और यह कि वह महिमा के साथ पुन: वापस आएगा।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:22-24 में पिन्तेकुस्त के दिन लूका द्वारा लिखित पतरस के दिए हुए सन्देश को सुनिए:

> **यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है... तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता (प्रेरितों के काम 2:22-24)।**

ध्यान दें कि पतरस के सुसमाचार की घोषणा में मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के विषयपरक तथ्य सम्मिलित हैं।

परन्तु लूका सुसमाचार के ज्यादा व्यक्तिपरक विषय की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। कई अवसरों पर लोगों द्वारा मसीह की सच्चाई को व्यक्तिगत् तौर पर स्वीकार करने की महत्वपूर्णता के ऊपर उसने जोर दिया ताकि यह उनके जीवनों को बदल पाए।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:37-38 में पिन्तेकुस्त के दिन लूका द्वारा लिखित पतरस के दिए हुए सन्देश में ये शब्द भी शामिलहैं।

> **तब सुननेवालों के हृदय छिद गए... "कि हे भाइयो, हम क्या करें?" पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों के काम 2:37-38 हिन्दी का पुराना अनुवाद)।**

मसीही सुमसाचार उन लोगों के हृदयों को छेदता है जो उसे सुनते हैं। यह न केवल उन तथ्यों को महज स्वीकार करना है, परन्तु उद्धारकर्ता का हृदयों को छुने वाला, जीवन-परिवर्तन करने वाला मिलन है।

जैसा कि हमने कहा था, पहली-शताब्दी का यहूदी धर्मविज्ञान यह विश्वास करता था कि मसीहा एक राजनैतिक राज्य को एकदम से स्थापित कर देगा। परन्तु यीशु और उसके प्रेरितों ने यह सिखाया कि मसीहा का राज्य कलीसिया के फैलाव और लोगों के व्यक्तिगत् परिवर्तन के द्वारा धीरे धीरे बढ़ता है।

यह एक कारण है कि लूका ने सुसमाचार की घोषणा के द्वारा अविश्वासियों को मन फिराव के ऊपर इतना ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया है। वह जानता था कि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर का मसीहा वाला राज्य पूरे संसार भर में फैलेगा।

पुराने नियम की व्यापक रूपरेखा के दर्शन को मन में रखने के साथ, हमें प्रेरितों के काम की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के तीसरे पहलू पर ध्यान देना चाहिए: लूका के सुसमाचार में इसकी नींव के होने पर।

लूका का सुसमाचार

जैसे-जैसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि यह उन दो संस्करणों में दूसरा है जिसे लूका ने थियुफिलुस को लिखा। लूका सदैव चाहता था कि इन पुस्तकों को एक साथ इकट्ठा पढ़ा जाना चाहिए। उसका सुसमाचार कहानी का पहला हिस्सा है और प्रेरितों के काम की पुस्तक कहानी का दूसरा हिस्सा। इस कारण, प्रेरितों के काम की पुस्तक को सही तरीके से पढ़ने के लिए, हमें समझने की जरूरत है कि यह कैसे उस कहानी को आगे बढ़ाती है जो सुसमाचार में आरम्भ हुई थी।

ऐसे कई तरीके हैं जिनके द्वारा लूका का सुसमाचार प्रेरितों के काम के सन्देश को समझने के लिए हमें तैयार करता है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए हम परमेश्वर के राज्य के विषय के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जो कि दोनों संस्करणों में फैला है। लूका के सुसमाचार में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के लिए नमूने और लक्ष्य की स्थापना की और अपने काम को अपने स्वर्गारोहण के बाद जारी रखने के लिए अपने प्रेरितों को तैयार किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, यीशु स्वर्ग में आरोहित हो गया और अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से, सुसमाचार के द्वारा अपने राज्य का विस्तार करने हेतु उत्तरदायित्व देकर छोड़ गया है।

हम उन दो तरीकों पर ध्यान देंगे जिनके द्वारा लूका के सुसमाचार ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों द्वारा राज्य-निर्माण कार्य के लिए रास्ता तैयार किया है। पहले, हम यीशु की ओर देखेंगे उस व्यक्ति के रूप में जो राज्य को लेकर आया। और दूसरा, हम प्रेरितों की भूमिका को खोजेंगे जो यीशु के द्वारा स्वर्गारोहण के बाद उसके राज्य को लाने वाले कार्य को जारी रखे हैं। आइये हम यीशु के साथ, उस व्यक्ति के रूप में आरम्भ करें जो परमेश्वर के राज्य को लाता हैं।

यीशु

अपने सम्पूर्ण सुसमाचार में, लूका यीशु को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में चित्रित करता है जो परमेश्वर के राज्य के आने के बारे में घोषणा कर रहा था और एक ऐसे राजा के रूप में जो उसके सिंहासन पर विराजमान होकर राज्य को सत्ता में ला रहा था। यीशु ने स्वयं दोनों विचारों को कई स्थानों में बोला। परन्तु उदाहरण के रूप में, हम केवल उन दो समयों पर ही ध्यान देंगे जब अपनी सार्वजनिक सेवकाई में वह इसका उल्लेख करता है।

एक तरफ, लूका 4:43 में, यीशु ने इन शब्दों को अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में बोला

मुझे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है... क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ (लूका 4:43)।

दूसरी तरफ, अपनी सार्वजनिक सेवकाई के अन्त में, यरूशलेम में विजयी प्रवेश के ठीक पहले जब उसे राजा के रूप में ऊँचे पर उठाया गया था, यीशु ने लूका 19:12-27 में दस मुहरों का दृष्टान्त बताया। इस दृष्टान्त में, उसने समझाया कि परमेश्वर का राज्य कैसे धीरे धीरे आएगा। उसके दिनों में, बहुत से यहूदी एक ऐसे राज्य की आशा करते थे जो कि अपनी पूर्णता में एकदम से आ जाएगा। परन्तु यीशु ने शिक्षा दी कि वह राज्य को धीरे-धीरे और चरणों में ला रहा था। यीशु ने राज्य का आरम्भ कर दिया था, परन्तु वह काफी देर से मुकुटधारी राजा बनने के लिए दूर जा रहा था, और वह अपने वह अपने पुन: वापसी तक राज्य को पूरा नहीं करेगा।

लूका 19:11-12 में, जिस तरह से दस मुहरों का दृष्टान्त आरम्भ होता है उसे सुनिए:

उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिए कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होने वाला है। अत: उसने कहा: "एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए।" (लूका 19:11-12)।

ध्यान दीजिए यहाँ पर क्या होता है। यीशु यरूशलेम में प्रवेश करने वाला था और उसके राजा होने की घोषणा की जाने वाली थी, परन्तु वह बिल्कुल भी नहीं चाहता कि लोग यह अनुमान लगाएँ कि वह स्वयं को उस समय एक सांसारिक शासक के रूप में स्थापित करेगा। इसके बजाय, वह अपने राजपद को प्राप्त करने के लिए, एक लम्बे समय के लिए रवाना हो जाएगा, और भविष्य में अपने सांसारिक राज्य पर शासन करने के लिए पुन: वापस आएगा।

और वास्तव में यही हुआ। यरूशलेम में, यीशु को गिरफ्तार किया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया। फिर वह मृतकों में से पुन: जीवित हो उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया, और इस क्षण पर उसने पिता से अपने राजपद को प्राप्त किया। और उसे अभी भी अपने राज्य को पूरा करने के लिए पुन: वापस आना है।

उस तरीके के इस समझ के साथ जिसमें लूका का सुसमाचार यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करता है जो राज्य को लाया है, हम सुसमाचार में स्थापित दूसरे विषय पर ध्यान देने की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: सुसमाचार के द्वारा राज्य को आगे बढ़ाने में प्रेरितों की भूमिका।

प्रेरित लोग

यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने वाले दिन से पहली वाली रात में, उसने अपने प्रेरितों को राज्य को लाने के उसके कार्य को आगे बढ़ाने के लिए निर्देश दिया।

लूका 22:29-30 में, उसके द्वारा कहे हुए शब्दों को सुनिए:

और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिए एक राज्य ठहराता हूँ, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पिओ, वरन् सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो (लूका 22:29-30)।

यीशु ने अपने प्रेरितों को अपने राज्य में अगुवे और न्यायी करके ठहराया। उनका कार्य था कि, वह पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए, जिस कार्य को जारी रखने जिसे वह छोड़ कर गया था, राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना और पूरे संसार भर में उसके राज्य का विस्तार करना।

इस तरह, हम देखते हैं कि लूका का सुसमाचार यह स्थापित करता है कि राज्य की उदघोषणा करना यीशु का प्राथमिक कार्य था और उसने अपने प्रेरितों को अधिकृत किया कि वे उसके स्वर्गारोहण के बाद इस कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाते रहें।

और प्रेरितों के काम की पुस्तक ठीक वहाँ से आरम्भ करती है जहाँ पर लूका का सुसमाचार खत्म होता है। यह लूका द्वारा यह समझाने के साथ शुरू होती है कि मृतकों में से पुनरुत्थान के बाद और स्वर्ग में चढ़ने से पहले, यीशु ने प्रेरितों को शिक्षा देने में समय बिताया।

प्रेरितों के काम 1:3-8 में लूका के दिए हुए वर्णन को सुनिए:

और उस ने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा... और उन्हें आज्ञा दी: "कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो... परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।" सो उन्हों ने इकट्ठे होकर उस से पूछा: "कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा? उस ने उन से कहा; उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। (प्रेरितों के काम 1:3-8)

एक बार फिर से, यीशु अपने अनुयायियों को उत्साहित करता है कि वे राज्य को एकदम पूर्ण होने की ओर न देखें। इसके बजाय, उसने यह पुष्टि की कि प्रेरित लोग संसार भर में सुसमाचार का प्रचार करने के उसके कार्य के लिए जिम्मेवार होंगे।

और ठीक यही कार्य प्रेरितों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया। उन्होंने परमेश्वर के राज्य के वर्तमान ढाँचे के रूप में कलीसिया की स्थापना की। और उन्होंने राज्य के सुसमाचार को नए स्थानों और लोगों तक पहुँचाया, राज्य को यरूशलेम से लेकर यहूदिया से लेकर सामरिया और पृथ्वी के अन्तिम छोर तक फैलाते चले गए।

प्रेरितों के काम 28:30-31 में लूका कैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक का अन्त करता है उसे सुनिए:

वह पूरे दो वर्ष... अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 28:30-31)।

ध्यान दें बस सामान्य तौर पर यह कहने की बजाए कि पौलुस ने "सुसमाचार" का प्रचार किया, लूका कहता है कि पौलुस ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक बिल्कुल वैसी ही खत्म होती है जैसे इसका आरम्भ हुआ था, अर्थात ऐसे लोगों के रूप में प्रेरितों की भूमिका पर जोर देते हुए जो परमेश्वर के राज्य का विस्तार, अपनी घोषणा के द्वारा इस पृथ्वी पर करते हैं।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि लूका ने पुराने नियम की पृष्ठभूमि में और मसीह में परमेश्वर के राज्य की पहली शताब्दी की मान्यताओं में होकर इसे लिखा। और हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका के सुसमाचार का अनुसरण यह विवरण देते हुए करती है कि मसीह की सेवकाई के द्वारा आरम्भ किया हुआ राज्य का कार्य कैसे प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया के द्वारा जारी रहा, जब वे पवित्र आत्मा पर निर्भर रहे।

निष्कर्ष

इस अध्याय में, हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक के बारे में जाँच की; हमने इसकी ऐतिहासिक समयावधि का विवरण दिया; और हमने इसकी धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि की खोजबीन की। इन विवरणों को ध्यान में रखते हुए जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करते हैं तो हम इसके वास्तविक अर्थ को पाते हैं, और इन्हें सही तरीके से हमारे जीवनों में लागू करते हैं।

जबकि हम इस श्रृखंला को जारी रखते हैं, तो हम यह देखेंगे कि कैसे प्रेरितों के काम की पृष्ठभूमि इस सुन्दर पुस्तक में कई झरोखों को खोल देती है। हम जान पाएंगे कि कैसे परमेश्वर द्वारा प्रेरित लूका का आरम्भ की कलीसिया का विवरण थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया को मसीह की विश्वासयोग्य सेवकाई में अगवाई करता है। और हम देखेंगे कि जब हम अपने स्वयं के संसार में राज्य का सुसमाचार प्रचार को जारी रखते हैं तो प्रेरितों के काम की पुस्तक वर्तमान की कलीसिया को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती है।